International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 29-31
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 22-06-2026
Accepted: 13-07-2026
Publish : 14-07-2026

डॉ. मंजू सिंह ठाकुर
विभागाध्यक्ष,
(योग एवं दर्शन विभाग),
अग्रसेन महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

Correspondence:
डॉ. मंजू सिंह ठाकुर
विभागाध्यक्ष,
(योग एवं दर्शन विभाग),
अग्रसेन महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

बौध्द धर्म के अनुसार द्वादश निदान और जगत: एक दार्शनिक अध्ययन

डॉ. मंजू सिंह ठाकुर

शोध सार:-

बौध्द दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। बौध्द दर्शन का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन के दु:खों का निवारण तथा निर्वाण की प्राप्ति है। बौध्द धर्म का द्वादश निदान का सिध्दांत संसार, दु:ख तथा पुर्नजन्म की प्रक्रिया को समझाने वाला आधारभूत सिध्दांत है।

महात्मा बुध्द इस जगत को प्रतीत्य समुत्पाद के नियम से ही संचालित मानते है। पेड़-पौधे, मनुष्य, देवता सभी कार्यक्षेत्र में कार्यकारण के नियम के अधीन है। इस जगत् के प्रत्येक क्षेत्र में कार्यकारण का नियम काम करता है। प्रतीत्य समुत्पाद बौध्द धर्म का मूल मन्त्र है। प्रतीत्य समुत्पाद के अनुसार इस जगत में प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है। कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता। इस जगत में जितनी भी घटनाएँ होती है, प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण होता है, बिना कारण के कोई भी घटना नही घट सकती यह समस्त जगत् घटना चक्र है। जब यह घटना घटती है जब इस घटना का उद्य होता है, तब उस अमुक घटना का उदय होता है। जब यह आमुक घटना नही होती तब वह घटना भी नहीं होती है, इस किसी घटना विशेष के अन्त हो जाने पर अमुक घटना विशेष का भी अन्त हो जाता है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य द्वादश निदानों की दार्शनिक व्याख्या करना तथा यह स्पष्ट करना है कि, बौद्ध दृष्टिकोण में जगत की उत्पत्ति, परिवर्तन और नाश किस प्रकार कारण - कार्य - संबंध पर आधारित है।

मूल शब्द:- कार्यकरण, जगत, उदय, क्षणिकम्, स्थायित्व, निवारण।

भूमिका:-

बौध्द धर्म ईश्वर को जगत का सृष्टिकर्ता नहीं मानता। इसके अनुसार संसार निरंतर परिवर्तनशील है तथा कारण और परिणाम के नियमों से संचालित होता है यही कारण है कि बौध्द दर्शन में जगत की व्याख्या वैज्ञानिक एवं तर्क संगत प्रतीत होती है।

चूंकि इस जगत् की सभी वस्तुएँ घटनाएँ है इसलिए किसी भी वस्तु का स्थायी स्वभाव नहीं है। इस जगत की सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं: सर्वम् क्षणिकम् क्षणिकम्। बौध्द धर्म के अनुसार इस जगत की समस्त वस्तुएँ घटनाओं का समूह है, पर इस समूह का नाम-रूप है जब तक नामरूप बना रहेगा तब तक किसी एक वस्तु को उसी नाम रूप में व्यावहारिक रीति से समझा जाएगा। नामरूप ही घटना समूह को स्थायित्व प्रदान करते है। वास्तव में इस जगत् में कहीं भी स्थायित्व नहीं है जिस प्रकार मोमबत्ती प्रतिक्षण बदलती रहती है और जलते-जलते विलुप्त हो जाती है, पर जब तक मोमबत्ती का प्रकाश बना रहता है उसे हम वही मोमबत्ती समझते है।

यह सिध्दांत हमें बतलाता है कि इस जगत् में प्रत्येक घटना किसी न किसी कारण पर आधारित है। इसलिए यदि इस जगत में दु:ख है तो उस दु:ख का भी कारण है, और उसका निवारण भी संभव है। प्रतीत्यसमुत्पाद के बारह.....कहते हैं।

द्वादश निदान के प्रकार - बौध्द दर्शन में निम्नलिखित बारह निदानों का वर्णन मिलता है -

(1) अविधा (2) संस्कार (3) नामरूप (4) विज्ञान (5) षडायन (6) स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान (10) भव (11) जाति (12) जरामरण

ये सभी कारण परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए है तथा एक-दूसरे को उत्पन्न करते है।

इस प्रकार प्रतीत्य समुत्पाद के अनुसार इस जगत् में घटनेवाली समस्त घटनाएँ एक-दूसरे पर निर्भर करती हैं। सभी सापेक्ष है, और प्रत्येक क्षणभंगुर घटना निस्स्वभाव होती है, वास्तव में जगत् क्षणिक घटनाओं का प्रवाह मात्र है। जीवित रहने की इच्छा ही मानव जीवन की आधारशीला है। इस जगत में प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है। इस जीवन का अन्त ही मुक्ति है। इस जगत में जन्म लेना ही मनुष्य के लिए सबसे बड़ा पाप है। प्रतीत्य समुत्पाद का नियम अटल है। यह नियम तीनों कालों में लागू होता है। यह अनादि और अनन्त है।

द्वादश का अर्थ बारह तथा निदान का अर्थ है, कारण। इस प्रकार द्वादश निदान ऐसे बारह कारण है, जिनके आधार पर इस जगत में जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म का चक्र चलता रहता है।

"अस्मिन सति इदं भवति। अस्य उत्पादा
इदं उत्पद्यते। अस्मिन् आज्ञप्ति इदं न भवति।"

अर्थात - इसके होने से वह होता है, इसके उत्पन्न होने से वह उत्पन्न होता है, तथा इसके अभाव में वह भी उत्पन्न नहीं होता। अविधा के प्रत्यय से संस्कार, संस्कार के प्रत्यय से विज्ञान, विज्ञान प्रत्यय से नामरूप, नामरूप, के प्रत्यय से षडायतन, षडायतन प्रत्यय से स्पर्श, स्पर्श प्रत्यय से वेदना, वेदना प्रत्यय से तृष्णा, तृष्णा के प्रत्यय से उपादान, उपादान के प्रत्यय से भव, भव के प्रत्यय से जाति, जाति के प्रत्यय से जरामरण होते है। इस प्रकार इन सभी स्कंधों से दुःख का निषेध होता है। यही प्रतीत्य समुत्पाद है। इन्हें हम द्वादश निदान भी कहते है। यह सिध्दांत हमें बतलाता है कि इस जगत् में प्रत्येक घटना किसी न किसी कारण पर आधारित है। इसलिए यदि इस जगत में दुःख है तो उस दुःख का भी कारण है, और उसका निवारण भी संभव है। प्रतीत्यसमुत्पाद के बारह.....कहते हैं।

द्वादश निदान के प्रकार - बौध्द दर्शन में निम्नलिखित बारह निदानों का वर्णन मिलता है -

(1) अविधा (2) संस्कार (3) नामरूप (4) विज्ञान (5) षडायन (6) स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान (10) भव (11) जाति (12) जरामरण

ये सभी कारण परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए है तथा एक-दूसरे को उत्पन्न करते है।

अविद्या - अविद्या से तात्पर्य अज्ञान से है। इस जगत मे चार आर्य सत्यों का अज्ञान ही अविद्या है। अज्ञान के कारण ही व्यक्ति इस जगत में लोभ और मोह में डूबता है। "प्राचीन बौध्द धर्म के मत में अज्ञान ही अहंकार अथवा अहंभाव का कारण है। इसी के कारण एक व्यक्ति को यह अनुभव होने लगता है कि वह अन्य सब जगत से पृथक है जिसका संसार की व्यवस्था से कोई संबंध नही है। व्यक्ति का जीवन एक पाप है और इच्छा उसकी बाह्य अभिव्यक्ति है। मनुष्य दुःखी इसीलिए है, क्योंकि वह जीवन-धारण किए हुए है समस्त दुःखों की उत्पत्ति जीवन धारण करना है। अज्ञान की शक्ति इतनी महान् है कि अत्यंत दुःख के रहते हुए भी लोग जीवन में आसक्ति रखते हुए पाए जाते है। (1) पूर्व जन्म की क्लेशदशा ही अविधा है।

(2) संस्कार - इस श्रृंखला की दूसरी कड़ी संस्कार है। पूर्वजन्म की काम्यावस्था ही संस्कार है। "मनुष्य अविधा या संस्कार की पूँजी से या उनके धरातल पर पंचस्कन्ध शरीर के रूप में जन्म के लिए गर्भ में आते है। विश्व मंे जितने प्राणी है, सब गर्भ में आते है। अविद्या ओर संस्कार वर्तमान जीवन के लिए आलम्बन या प्रतिष्ठा का कार्य करते है, दोनों में एक के अभाव में भी वर्तमान भव नहीं हो सकता।(2) पूर्व जन्म में किए गए कर्म ही हमारे वर्तमान जन्म का कारण है। हमारे द्वारा किए गए अच्छे या बुरे कर्म की वजह से ही इस जन्म में अच्छा या बुरा फल को भोग रहे है। संस्कार के भी तीन प्रकार है - (1) काय संस्कार (2) मन संस्कार (3) वाक् संस्कार।

(3) विज्ञान - विज्ञान से तात्पर्य जीवन की उस अवस्था से है, जब प्राणी इस जगत में आने से पहले माता के गर्भ में प्रवेश करता है, गर्भ में प्रवेश करते ही प्राणी में चेतना जाग्रत हो जाती है। यह गर्भ का क्षण होता है। "यह प्रतिसन्धि स्कन्ध है। इस जन्म के लिए रूपवेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान का जो बीजारोपण है वही विज्ञान है। यह प्रश्नस्कंधों की योनिगत पूर्वावस्था है।(3) विज्ञान को विजानन भी कहते है। जिसका अर्थ है - वे चित्तधाराएँ जो पूर्वजन्म में किए गए कुशल या अकुशल कर्मो के विपाक-स्वरूप प्रगट होते है और जिनके कारण ही सत्व अपनी इन्द्रियों के विषय में जानकारी रखता है।

(4) नामरूप - नाम रूप दो शब्दों से मिलकर बना है नाम और रूप। रूप में चार महाभूत-पृथ्वी, जल, तेज और वायु तथा नाम में संज्ञा, वेदना, सस्कार और विज्ञान ये चार स्कंध आते है। दोनो को मिलकार ही पंच स्कंध नामरूप कहलाते है। नामरूप विज्ञान से होता है, जब विज्ञान माता की कुक्षि में प्रतिसंधि ग्रहण करता है, तभी से नामरूप उत्पन्न होना शुरू हो जाते है।

(5) षडायतन - छह आयतन अर्थात पाँच इन्दियाँ और षडायतन कहलाते है। ये षडायतन ही ज्ञान उत्पत्ति में सहायक होते हैं। षडायतन से हमें उस अवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है, जब सत्व माता के उदर से बाहर आता है और उसकी समस्त छः इन्दियाँ आँख, कान, नाक, जिह्वा स्पर्श और मन पूर्ण रूप से तैयार हो जाते है, परन्तु वह अभी उन्हें प्रयोग नहीं कर सकता ।

(6) **स्पर्श** - यह वह अवस्था है जब सत्व बह्म् जगत के पदार्थो के सम्पर्क में आता है। इन्द्रियों और विषय का सन्निपात ही स्पर्श कहलाता है। यह पंचनेन्द्रिय और मन, इन छह के भेद से छह प्रकार का होता है।

(7) वेदना - वेदना से तात्पर्य अनुभव करने से है। इन्द्रिय और विषय के संयोग से मन पर जो प्रथम प्रभाव पड़ता है, उसी का नाम वेदना

है। "सुख-दुःख की अनुभूति का नाम वेदना है। यावत् मैथुन राग का अमुदाचार नहीं होता तब तक की अवस्था वेदना है। (4) चित्त और वेदना का आपस में अटूट संबंध है। वेदना के तीन प्रकार माने जाते है।

(1) सुखावेदना (2) दुःखावेदना (3) असुखादुःखावेदना

(8) तृष्णा - षडविषयों के प्रति प्यास का होना तृष्णा है। यह आसक्ति रूप होती है। यह तीन प्रकार की कही गयी है - (1) कामतृष्णा (2) भवतृष्णा (3) विभव तृष्णा। इस जगत् में तृष्णा ही दुःख का मूल कारण है। "जिस प्रकार की जड़ की हानि नहीं हुई है, अर्थात जड़ बची हुई है, तो भी वृक्ष काटे जाने के पीछे फिर नए सिरे से विशाल रूप मंे बढ़ सकता है, इसी प्रकार यदि तृष्णा की उत्तेजना पूर्णरूप से नहीं मरी है तो दुःख सदा ही नये सिरे से फूट पड़ेगा। (5) तृष्णा अपने त्रिगुण रूप में इस जगत के दुःखों का कारण है।

(9) उपादान - भोगों की प्राप्ति के लिए सत्व का सक्रिय रूप से प्रयत्न करना ही उपादान है। इसके चार प्रकार है-

(1) कामोपादान - अर्थात कामवासनाओं मे लिप्त रहना।

(2) दृष्टपादान - मिथ्या सिद्धान्तों में विश्वास करना।

(3) शीलव्रतोपादान - व्यर्थ के शीलाचार में लगे रहना।

(4) आत्मवादोपादन - आत्मा के अस्तित्व में दृढ़ आग्रह करना।

(10) **भव** - होना मात्र भव। अर्थात पुनर्जन्म कराने वाला कर्म भव कहलाता है। इसके दो प्रकार है। उपपत्ति भव और कर्म भव। जिस उपादान को लेकर सत्व जिस-जिस लोक में जन्मता है। उसका वही उपपत्ति भव है, जो कर्म पुनर्जन्म कराने वाले होते है। उन्हें कर्म भव कहते है। "भव से जन्म होता है, जन्म में वृध्दावस्था और मृत्यु पीड़ा, विलाप, दुःख, चिंता एवं निराशा उत्पन्न होती है।(6) भव से तात्पर्य पुनर्जन्म से है।

(11) **जाति** - जाति से तात्पर्य जन्म से है। उत्पन्न होना जाति है। पूर्वभव के कारण ही सत्व इस जगत में जन्म लेता है। पंचस्कन्धों के स्फुरण की अवस्था जाति है। मज्झिम निकाय में भगवान कहते है कि "उन-उन सत्वों का उस-उस सत्व निकाय में जाति, सज्जाति, अवक्रान्ति, अभिनिवृत्ति स्कन्धों का प्रादुर्भाव और आयतनों का प्रतिलाभ यही जाति है।(7) जाति को पुनः सन्धि भी कहते है।

(12) **जरामरण** - जरा और मरण में दो अवस्थाएँ है। जीर्ण होना जरा है। जन्म के साथ ही वृध्दावस्था, रोग, शोक और मृत्यु निश्चित हो जाते हैं। इस प्रकार दुःख का चक्र पुनः आरंभ हो जाता है।

निष्कर्ष:- इस प्रकार हम देखते है कि द्वादश निदान यह स्पष्ट करता है कि संसार में कोई भी घटना आकस्मिक नहीं होती। प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण होता है। यदि कारण का नाश कर दिया जाए, तो परिणाम भी समाप्त हो जाता है। इसी आधार पर बौद्ध धर्म यह प्रतिपादित करता है कि अविधा के नष्ट होने पर संस्कार भी समाप्त होंगे और मनुष्य को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति भी मिलेगी और अंततः निर्वाण की प्राप्ति होगी।

वर्तमान समय में भी द्वादश निदान का यह सिद्धांत प्रासंगिक है। आज हर व्यक्ति मानसिक तनाव में रहता है। उपभोक्तावादी संस्कृति, प्रतिस्पर्धा का युग, असंतोष और भौतिकता वादी युग से ग्रसित समाज में महात्मा बुध्द का यह सिध्दांत व्यक्ति को आत्म-चिंतन, संयम, नैतिक जीवन, जागरूकता तथा मानसिक संतुलन का मार्ग प्रदान करता है। वर्तमान समय में दर्शन, नैतिक शिक्षा, मनोविज्ञान तथा सामाजिक जीवन में इसकी उपयोगिता निरंतर बढ़ते जा रही है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि बौद्व धर्म का द्वादश निदान केवल धार्मिक सिध्दांत नही, बल्कि जीवन और जगत को समझने की एक सार्वभौमिक दार्शनिक पद्वति है। यह जगत के हर व्यक्ति को शिक्षा देती है कि यदि हम हमारे दुःखों के कारणों को समझ जाए और उसका पूर्ण रूपेण निराकरण कर लें, तो व्यक्तिगत सामाजिक और वैश्विक स्तर पर शांति सद्भावना और कल्याण को स्थापित कर सकते है। यही कारण है कि द्वादश निदान का यह सिद्धांत आज भी बौद्ध दर्शन की आधारशिला होने के साथ साथ समस्त मानव जगत के लिए एक प्रेरणादायी एवं कालजयी जीवन-दर्शन के रूप में अपनी महत्ता बनाए हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बौध्द दर्शन सार: धर्म कीर्ति, भिक्षु, पृ.-56, भदन्त धर्मकीर्ति महाथेरो, संस्थापक - भारतीय बुध्द धम्म ज्ञान विद्यालय तथा महाप्रज्ञा बुध्द विहार, अमरावती ।
2. बौध्द दर्शन सार: धर्मकीर्ति, भिक्षु, पृ .-56, भदनत धर्मकीर्ति महाथेरो, संस्थापक - भारतीय बुध्द धम्म ज्ञान विद्यालय तथा महाप्रज्ञा बुध्द विहार, अमरावती ।
3. बौध्द दर्शन सार: धर्मकीर्ति, भिक्षु पृ.-57, भदन्त धर्मकीर्ति महाथेरो, संस्थापक - भारतीय बुध्द धम्म ज्ञान विद्यालय तथा महाप्रज्ञा बुध्द विहार, अमरावती।
4. Dharmarakshit, B. (2017). धम्म पद: पाली संसकृत एवं हिन्दी अनुवाद Delhi : Motilal Banarsidass ISBN – 9788120825505
5. Radhakrishnan. S (2019). भारतीय दर्शन (भाग-1). नई दिल्ली Rajpal & Sons. ISBN – 13:9788170282761
6. Nanamoli, B. & Bodhi, B. (Trans) (1995). The middle length discourses of the Buddha : Ps Translation of the Majjhima Nikaya. Bostan, MA: Wisdom Publication.
7. Nanamoli, B. & Bodhi, B. (Trans) (1995). The middle length discourses of the Buddha : Ps Translation of the Majjhima Nikaya. Bostan, MA: Wisdom Publication.
8. आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन तत्व आधार एवं कथानुयोग खण्ड-3, तत्व आचार व कथानुयोग: राष्ट्र सन्त मुनि श्री नगराज जी डी.लिट् कॉन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
9. (2019) बुद्धचर्या, किताब महल (मूल कृति प्रकाशित 1944)
10. पाण्डेय गोविन्द चन्द्र (2015) बौद्धधर्म के विकास का इतिहास. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ISBN – 13:9789382175590
11. (2014) बुध्द और उनका धम्म, सम्यक प्रकाशन (मूल कृति प्रकाशित 1957)